Vol II Issue XI Dec 2012

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 11, Dec. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net
ORIGINAL ARTICLE

काव्य में अलंकार का सीान

वाघमारे पंढरीनाथ महादेवराव

एम.ए., एम.एड्., पीएच. डी., नेट, सेट
सहायक प्राध्यापक, श्री. सरस्वती टिचर्स एज्युकेशन एम. एड्. कॉलेज, अंबाजोगाई, जि. बीड.

सारांशः

मानव समाज सदा से ही सुखोपभोगी समाज कहलाया है। उसने अपनी जीवन पध्दति को सुखद एवं आनंदमयी बनाने के लिए अनेक साधनों का प्रयोग किया है। ऐसे ही एक साधन की उसने उत्पत्ति की है, जिसका नाम अलंकार है। मानव समाज सौंदर्योपासक है। उसकी इस प्रवृत्ति ने ही अलंकारों को जन्म दिया है। शरीर की सुंदरता को बढ़ाने के लिए जिस प्रकार मनुष्य ने भिन्न भिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रयोग किया उसी प्रकार उसने भाषा को सुंदर बनाने के लिए अलंकारों की योजना की। अपनी बात को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए चमत्कार अथवा रमणीयता का आश्रय लेना पड़ता है। उसी प्रकार काव्य को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए चमत्कार अथवा रमणीयता का आश्रय लेना पड़ता है। यही रमणीयता अथवा चमत्कार काव्य में अलंकार कहलाता है। अलंकार हमारी आत्मप्रदर्शन तथा आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति के परिणाम है। भावाभिव्यंजन के लिए अपने काव्य को अधिक आकर्षक और चमत्कारी बनाने के लिए हम वाणी को अधिकार धारण कराते है। इस प्रकार हम कह सकते है कि, अलंकार मनुश्य के मनोवेगों को चमत्कारी रुप में प्रकट करने का एक साधन है।

प्रस्तावना :

संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार संप्रदाय सबसे प्राचीन है। इसके प्रवर्तक होने का श्रेय आचार्य भामह को दिया जाता है। इसे प्रतिष्ठित एवं पुष्ठ करने वाले आचार्य है रुद्रट एवं जयदेव। इनके अतिरिक्त दण्डी, उद्भट, भोज, विश्वनाथ, अप्पय दीक्षित और पंडितराज जगन्नाथ ने भी अलंकार संप्रदाय के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अलंकारवादीयों अलंकार को काव्य का प्रमुख तत्व स्वीकार करते हुए इसे काव्य की आत्मा के पद पर प्रतिश्ठित किया। इस संप्रदाय का विस्तृत परिचय देने से पूर्व अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति और व्याख्या देना आवश्यक है।

अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति एवं लक्षण

अलंकार शब्द की रचना 'अलं' तथा 'कृ' धातू से हुई है, इस अलंकार शब्द का अर्थ है– 'सजावट'। अलंकार शब्द में 'अलं' और 'कार' दो शब्द है। अलं का अर्थ है भूशण। अर्थात् जो अलंकृत करे वह अलंकार है– 'अलंकारोंतीति अलंकारः। अथवा अलंक्रियते अनेनेत्लंकारः' जिसके द्वारा किसीकी शोभा होती है, वह अलंकार है। प्रथम व्युत्पत्ति के अनुसार अलंकार कर्ता या विधायक है। द्वितीय के अनुसार वे साधन मात्र है। अलंकार के सर्वसंमत दृष्टि से द्वितीय व्युत्पत्ति अधिक संगत है, जिसके अनुसार अलंकार काव्य की शोभा का साधन मात्र है। विभिन्न आचार्यों के अनुसार अलंकार के लक्षण निम्नलिखित है–

1. दण्डी

'काव्य शोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते' यहाँ अलंकार को काव्य के समग्र सौंदर्य के रुप में तथा सौंदर्य के उपकरण के रुप में ग्रहण किया गया है।

2. आचार्य वामन

काव्यं ग्रह्यमलंकारात्। ''सौंदर्यमलंकारः'' अर्थात् अलंकार गुणों का उत्कर्श है, सौंदर्य को बढ़ाते है। स्वयं काव्य के साध्य न होकर वे साधन है।

3. आचार्य भामह

'शब्द और अर्थ का वैचित्र ही अलंकार है।'

काव्य में अलंकारों का सीान

अलंकार काव्य की शोभा को बढ़ाने वाले तत्व के रुप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते रहे हैं। कुछ आचार्यों ने तो अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्व मानते हुए उसे काव्य की आत्मा के पद पर प्रतिश्ठित किया है। अलंकार की उपयोगिता को प्रायः सीाी आचार्यों ने स्वीकार किया है। प्रायः सभी कवियों ने भी अपने काव्य में अलंकारों को स्थान दिया है। ऐसा तो कोई भी कवि खोजने पर भी न मिलेगा जिसका काव्य अलंकारविहीन हो। संक्षेप में काव्य में अलंकारों की भूमिका निम्न प्रकार से स्पश्ट की जा सकती है।

Title :काव्य में अलंकार का स्थान
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] वाघमारे पंढरीनाथ महादेवराव yr:2012 vol:2 iss:11

1. काव्य को आकर्षक बनाना

जैसे कोई सर्वांग सुंदरी आभूषणों को धरण कर लेने पर अपने सौंदर्य' चार चॉंद लगा लेती है उसी प्रकार अलंकार काव्य को और भी आकर्षक और सुंदर बना देता है। अलंकार से भले ही काव्य के बाह्य सौंदर्य में ही वृध्दि होती हो, किंतु इतना तो निर्विवाद है कि अलंकार विहीन कविता काव्य रसिकों को आकृष्ट नहीं कर पाता।

2. काव्य को प्रभावक बनाना

अलंकार के प्रयोग से काव्य की उक्ति अधिक प्रभावशाली बन जाती है, पाठक और श्रोता अधिक तीव्रता के साथ उस भाव को ग्रहण करते है जिसे कवि अलंकारों के माध्यम से, अप्रस्तुत विधान के माध्यम से पाठक तक पहुॅंचाना चाहता है। आज बहुत गर्मी है यह कथ्न उतना प्रभावशाली नहीं है जितना ये कथन कि आज तो पृथ्वी तवे के समान जल रही है, सूरज आग बरसा रहा है–
बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा स जल रहा।

3. भाव के स्पष्टीकरण

अलंकार का एक उपयोग भाव को अधिक तीव्रता के साथ अनुभव कराने के लिए भी है। जब कोई कवि अपनी अनुभूति को सामान्य शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाता तब अलंकार योजना का सहारा लेता है। स्पष्ट है कि अलंकार वह लाठी है जो लंगड़े का सहारा बनती है और अन्य व्यक्तियों की शक्ति बनती है।

कविवर सुमित्रानंदन पंत के अनुसार ''अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार है।''

आचार्यों की अलंकार विशयक मान्यताऍं भिन्न भिन्न है, परिणामस्वरुप परवर्ती काल में काव्याशास्त्रीयों का एक पक्ष काव्य के लिए अलंकारों को अनिवार्य मानता है और दूसरा पक्ष गौण।

आचार्य कुंतक ने 'सालंकारस्य काव्यता' का प्रतिपादन कर अलंकार को काव्य का अविभाज्य अंग माना है।

आचार्य मम्मट रसावादी आचार्य है। वे अलंकारों का उद्देश रस को पुष्ट करना मानते है। तद्नुसार–

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येड़्द्वारेण जातुचित्।
हाराविदलडारास्तेनुप्रासोपमादयः।।

अलंकार हार आदि आभूषणों के समान है। और वे रस के उपकारक है। यही नहीं, मम्मट ने अपने काव्य के लक्षण में 'अनलंकृती पुनः क्वापि' लिखकर काव्य में अलंकारों की अनिवार्य उपयोगिता के आग्रह को समाप्त कर दिया था। किंतु अलंकारवादी आचार्य पीयूशवर्षी जयदेव ने मम्मट की इस मान्यता उपहासात्मक विरोध करते हुए लिखा है कि, 'जो काव्य को अलंकार रहित मानता है, तो अपने को पंडित माननेवाला वह व्यक्ति अग्नी को उश्णतारहित क्यों नहीं मानता'–

अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुश्णमनलंकृती।

भामह भी अलंकारवादी है। उनका मत है कि, आभूषण से रहित सुंदरी का मुख अपने प्रिय को अच्छा नहीं लगता है–

न कान्तमपि निर्भूशं विभाति वनितामुखम्

इसी स्वर में स्वर मिलाते हुए परवर्ती रीतिकालीन आचार्य केशवदास ने लिखा है–

जदपि सुजाति सुलक्षणी सुवरन सरस सुवृत्त।
भूशण बिन न विराजई कविता वनिता मित्त।।

हिंदी के अधिकांश आचार्यों ने इस विषय में संस्कृत के आचार्यों का पूर्णतः अनुकरण किया है। आचार्य केशव अलंकाहीन कविता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते है। यही नहीं, वे न तो वामन के समान काव्य की प्रतिष्ठा अलंकार पर मानते है और न अलंकारहीन कविता को निष्प्राण ही मानते है। उन्हें तो कभी कभी बाह्य श्रृंगार सौंदर्य का अपकर्षक प्रतीत होता है।

काहे को सिंगार के बिगारति है मेरी आली।
तेरे अंग बिना हि सिंगार के सिंगार हैं।।

देव अलंकृत काव्य को उत्कृश्ठ मानते हुए कहते हैं–

कविता कामिनी सुखद पद, सुबरन सरस सुजाति।
अलंकार पहिरे अधिक अद्भुत रुप लखाति।।

अर्थ के अभाव में काव्य मृतक के समान है। 'मृतक काव्य बिनु अर्थ को।' दूलह के मत में 'बिन भूषण नहिं भूषइ कविता' तथा अलंकृत काव्य का कर्ता कवि लोकप्रियता प्राप्त करता है। भिखारीदास के अनुसार, 'भूशन हैं भूशन सकल' अर्थात् अलंकार काव्य सौंदर्य का एक मात्र भूषण है। श्रीपति के मतानुसार–

जदपि दोष बिनु गुन सहित, सब तन परम अनूप।
तदपि न भूषन बिनु लसैं, वनिता कविता रुप।।

आधुनिक आचार्यों में रामचंद्र शुक्ल ने अलंकार को कथन की रोचक, सुष्ठु और प्रभावपूर्ण प्रणाली माना है 'मैं अलंकार को केवल वर्णन प्रणाली मात्र समझता हूँ, जिसके अंतर्गत चाहे किसी वस्तु का वर्णन किया जा सकता है, अन्यत्र एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि–

अलंकार है क्या?वण्रन करने की अनेक प्रकार की चमत्कारपूर्ण शैलियॉ, जिन्हें काव्यों से चुनकर प्राचीन आचार्यों ने नाम रखे हैं और लक्षण बनाये। ये शैलियॉ न जाने कितनी हो सकती हैं, अतः नहीं कहा जा सकता कि जितने अलंकारों के नाम ग्रंथों में मिलते हैं उतने ही अलंकार हो सकते हैं।

सुमित्रानंदन पंत पल्लव की भूमिका में अलंकार क स्वरुप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि, ''अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार है। भाशा की पुष्टि के लिए, राग की पूर्णता के लिए आवश्यक उपादान हैं, वे वाणी के आचार व्यवहार, रीति–नीति हैं, पृथक स्थितियों के पृथक स्वरुप, भिन्न अवस्थाओं के भिन चित्र हैं, वे वाणी के हास, अश्रु, स्वप्न, पुलक, हाव–भाव हैं। जहॉ भाशा की जाली केवल अलंकारों के चौखटे में फिट करने के लिए बुनी जाती हैं, वहॉ भावों की उदारता शब्दों की कृपण जड़ता में बॅधकर सेनापति के दाता और सूम की तरह 'इकसार' हो जाती है।'' पंतजी आगे लिखते हैं कि, अलंकारों की आयोजना भावाभिव्यक्ति के लिए ही होनी चाहिए एवं प्रत्येक अलंकार को अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखने का प्रयास न करना चाहिए। अलंकार साधन ही है, साध्य नहीं।

अलंकार काव्य का उत्कर्ष करते है। कभी–कभी अचित–चमत्कार भर हदय को काव्य का आनंद प्रदान करती है। रसवादी आचार्यों के मत से भी अलंकार शब्द अर्थ का, रस भाव का और वर्ण विषय का उपकार करते है। ''वास्तव में भाव ही रमणीयता, कोमलता, सूक्ष्मता सर्वसाधारण शब्दों द्वारा बिना किसी प्रकार की वक्रता के व्यक्त की जा सके यह संभव नहीं। अतः काव्य में उक्ति–चमत्कार का महत्त्व भी स्वीकार्य है।'' अलंकार काव्य का न केवल बाह्य तत्व है न ही पूर्ण अस्तित्व संमत अंतरंग तत्व। अपितु वह बाह्य एवं अंतर का एक ऐसा संश्लिष्ट तत्व है, जिसका काव्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए भोजराज ने अलंकारों की शारीरिक आभूषणों से तुलना करते हुए उन्हें तीन प्रकार का माना है– बाह्य, आभ्यंतर और बाह्याभ्यंतर। ''अलंकाराश्च त्रिधा–बाह्याः, आभ्यंतरा, बाह्याभ्यंतराश्च। तेशु बाह्याः वस्त्रमाल्य–विभूषणादयः। आभ्यांतराः दंतपरिकर्म नख्च्छेद अलककल्पनादयः बाह्याभ्यंतरा–स्नान, धूप, विलेपनादयः।

अंत में हमें यह ध्यान रख्ना चाहिए कि अलंकार काव्य का साधन है, साध्य नहीं। कवि का मुख्य उद्देश्य तो वर्ण्य विषय को प्रस्तुत करना है न कि अलंकार योजना करना। वह अपने विषय को रमणीय प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाने के लिए अलंकारों का सहारा ले सकता है, किंतु जब एक एक पंक्ति में दसियों अलंकार लाद दिए जाएंगे तो काव्य दब जाएगा और पाठक अलंकारों के चमत्कार में उलझ जाएगा। केशव जैसे कवियों की अलंकार योजना कुछ इसी प्रकार की है। आभूषण एक सीमा तक ही सौंदर्य बढ़ाते हैं, किंतु यदि कविता सुंदरी को आभूशणों के बोझ से लादकर बोझिल बना दिया जाएगा तो उसका आकर्षण समाप्त हो जाएगा।

फिर भी अलंकारों का काव्य में महत्व बराबर बना रहेगा। हिंदी के सुप्रसिध्द कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार– ''मैं अलंकारों के महत्व को भूल नहीं सकता, किसी प्रकार भी उनका अनादर नहीं कर सकता, क्योंकि अलंकारों ने काव्य कौशल के बहुत से ऐसे भेद खोले हैं जो अन्यथा अवशिष्ट रह जाते।''

कुछ भी हो कवि को इस ओर अवश्य सजग रहना चाहिए कि अलंकार भावाभिव्यक्त में साधक तो बनें पर बाधक न बनें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. काव्यशास्त्र की रुपरेखा : डॉ. रामदत्त भारद्वाज
2. भारतीय काव्यशास्त्र : डॉ. विजयपाल सिंह
3. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिध्दांत

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net